Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

किशोरों में मद्यसेवन : एक चिन्ताजनक विषय

डॉ. सुनीता खण्डेलवाल*

* अतिथि प्राध्यापक, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – पिछले कुछ वर्षो से स्कूल–कॉलेज में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में मादक पदार्थो एवं मद्यपान के प्रति रूझान बढ़ता हुआ प्रतीत हो रहा है। मद्य या मादक पदार्थ उनके दिलो–दिमाग पर बुरा प्रभाव ही नहीं डालती है वरन् उन्हें अपराध की ओर भी आकर्षित करती है। सरकार द्वारा इस संदर्भ में अनेकानेक कानून होने के बावजूद भी इसका व्यापार खुले आम चल रहा है। इसके प्रति सरकार एवं अभिभावको को किशोरों को मद्यपान की ओर आकर्षित होने से रोकने के प्रति कठोर कदम उठाने की आवश्यकता है।

आज के मौजुदा समय में किशोरों में मद्यपान की प्रवृत्ति एक चिन्ताजनक विषय है। सरकार ने इसे लेकर काफी कानून बनाए है, फिर भी यह समस्या जंगल में आग की तरह अपने पैर पसार रही है। मद्यपान की आदत धीरे–धीरे किशोरों को अपनी गिरफ्त में ले रही है। एक बार इसकी आदत हो जाने पर वो किसी भी प्रकार का अपराध करने को तैयार हो जाते है। चोरी, डकैती, बलात्कार, हत्या, अपहरण आदि की घटनाओं में अधिकांशत: नशेडियों का ही हाथ होता है। ऐसे अनगिनत खबरें अखबारों में रोजाना पढ़ने को मिलती है, जिन्हें पढ़ने पर लगता है कि इन किशोरों का भविष्य क्या होगा। ऐसा नहीं कि किशोर ही मद्य या मादक पदार्थो का सेवन करते है किशोरियां भी इसका सेवन करती हुई नजर आ रही है। आजकल नशे के कारण सड़क दुर्घटनाओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु कुल 200 किशोरों का चयन किया गया है। जिसमें 100 मद्यउपभोग करने वाले किशोर और 100 मद्यउपभोग न करने वाले किशोर शामिल है। अध्ययन का उद्देश्य किशोरों में मद्यपान करने क कारण एवं प्रकृति को जानना है।

प्रस्तुत शोध में क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान किशोरों में मद्यपान के निम्न कारण सामने आए–

सारणी संख्या 1

क्र.	मद्यपान के कारण	संख्या	प्रतिशत
1	शारीरिक अथवा मानसिक थकावट	07	3.50%
2	मनोरंजन अथवा आनन्द के लिए	17	8.50%
3	फैशन अथवा शौक के लिए	33	16.50%
4	नशा करने की आदत	22	11.00%
5	सस्ती और आसानी से उपलब्धता	19	9.50%
6	विज्ञापनों से प्रेरित होकर	02	1.00%
7	मद्यसेवन नहीं करते	100	50.00%
	योग	200	100%

स्त्रोत–क्षेत्रीय अध्ययन

उपरोक्त सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 100 मद्यसेवन करने किशोर उत्तरदाताओं में से 07(%) उत्तरदाता प्रतिदिन होने वाली शारीरिक व मानसिक थकावट दूर करने के लिए मद्य का सहारा लेते है, वे प्रतिदिन मकान, सड़क आदि निर्माण कार्य व अन्य शारीरिक श्रम करते है। 17(%) उत्तरदाता जीवन में मनोरंजन अथवा आनन्द पाने के लिए मद्यपान करते है, 33(%) उत्तरदाता फैशन अथवा शौक के लिए मद्यपान करते है ताकि वे अपने मित्रों के बीच सहज महसूस कर सकें, 22(%) उत्तरदाताओं को नशा करने की आदत है जिसके कारण उन्हें मद्य का सहारा लेना पड़ता है, 19(%) उत्तरदाता मदिरा की सस्ती व आसानी से उपलब्धता के कारण मद्यपान करते है, 02(%) उत्तरदाता विज्ञापनों से प्रेरित होकर मद्य या अन्य मादक पदार्थो का सेवन करते है। अध्ययन में 100 किशोर उत्तरदाता वे हैं जिन्होंने कभी भी मादक पदार्थो का सेवन नहीं किया है। अध्ययन में सर्वाधिक 33(%) उत्तरदाता फैशन अथवा शौक के कारण मद्यसेवन करते हैं। जबकि सबसे कम 02(%) किशोर उत्तरदाता टेलीविजन या अखबारों आदि विज्ञापनों से प्रेरित होकर मद्यसेवन करते है।

सारणी संख्या 2

क्र.	मद्यसेवन की प्रकृति	संख्या	प्रतिशत
1	महिने में एक बार	15	7.50%
2	महिने में दो–तीन बार	27	13.50%
3	हप्ते में दो–तीन बार	16	8.00%
4	दिन में दो–तीन बार	05	2.50%
5	दिन में एक बार	19	9.50%
6	कभी–कभी	18	9.00%
7	मद्यसेवन नहीं करते	100	50.00%
	योग	200	100%

स्त्रोत–क्षेत्रीय अध्ययन

उपरोक्त सारणी संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 100 मद्यसेवन करने किशोर उत्तरदाताओं में से 15(%) उत्तरदाता महिने में केवल एक बार ही मद्यसेवन करते हैं, 27(%) उत्तरदाता जब भी कभी इच्छा होती है, तब महिने में दो से तीन बार मद्यसेवन करते हैं, 16(%) उत्तरदाता हप्ते में दो से तीन बार मद्यसेवन करते है, 05(%) किशोर उत्तरदाता ऐसे हैं जिन्हें नशा करने की आदत है और जब तक दिन में दो से तीन बार मद्यसेवन नहीं करते हैं तब तक उन्हें नशा नहीं होता है। 19(%) किशोर उत्तरदाता दिन में

एक बार मद्यसेवन करते है। जबकि 18(%) उत्तरदाता कभी-कभी अवसर पर ही मद्यसेवन करते है। अध्ययन में 100 किशोर उत्तरदाता वे हैं जिन्होंने कभी भी मादक पदार्थों का सेवन नहीं किया है। अध्ययन में सर्वाधिक 27(%) उत्तरदाता महिने में दो से तीन बार मद्य का सेवन करते है जबकि सबसे कम 05(%) किशोर उत्तरदाता दिन में दो से तीन बार मद्यसेवन करते है।

सारणी संख्या 3

क्र.	मद्य के प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1	गृह निर्मित मद्य	17	8.50%
2	भारत में निर्मित मद्य	47	23.50%
3	विदेशी मद्य	08	4.00%
4	कोई भी	28	14.00%
5	मद्यसेवन नहीं करते	100	50.00%
	योग	200	100%

स्त्रोत-क्षेत्रीय अध्ययन

उपरोक्त सारणी संख्या 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 100 मद्यसेवन करने वाले किशोर उत्तरदाताओं में से 17(%) उत्तरदाता घर में निर्मित मदिरा का सेवन करते है, 47(%) उत्तरदाता भारत में ही निर्मित मदिरा का सेवन करते है, 08(%) उत्तरदाता विदेशी मदिरा का उपभोग करते है, 28(%) किशोर उत्तरदाता ऐसे हैं उन्हें जो भी आसानी से उपलब्ध हो जाती है उसी का सेवन कर लेते है। अध्ययन में 100 किशोर उत्तरदाता वे हैं जिन्होंने कभी भी मद्य का सेवन नहीं किया है। अध्ययन में सर्वाधिक 47(%) उत्तरदाता भारत में ही निर्मित मदिरा का सेवन करते है जबकि सबसे कम 08(%) किशोर उत्तरदाता ऐसे हैं जिन्हें जो भी उपलब्ध होती है उसी का सेवन कर लेते है।

सारणी संख्या 4

क्र.	मद्यसेवन करते समय की स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	अकेले में	11	5.50%
2	मित्रों के साथ	49	24.50%
3	परिवार/रिश्तेदारों के साथ	21	10.50%
4	किसी भी तरह	19	9.50%
5	मद्यसेवन नहीं करते	100	50.00%
	योग	200	100%

स्त्रोत-क्षेत्रीय अध्ययन

उपरोक्त सारणी संख्या 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 100 मद्यसेवन करने वाले किशोर उत्तरदाताओं में से 11(%) उत्तरदाता अकेले ही मदिरा का सेवन करते है, 49(%) उत्तरदाता अपने मित्रों के साथ मदिरा का सेवन करते है, 21(%) उत्तरदाता परिवार व अपने रिश्तेदारों के साथ मदिरा का उपभोग करते है, 19(%) किशोर उत्तरदाता ऐसे हैं जो किसी भी प्रकार से मदिरा का सेवन कर लेते है। अध्ययन में 100 किशोर उत्तरदाता वे हैं जिन्होंने कभी भी मद्य का सेवन नहीं किया है। अध्ययन में सर्वाधिक 49(%) उत्तरदाता अपने मित्रों की संगत में मदिरा का सेवन करते है जबकि सबसे कम 11(%) किशोर उत्तरदाता ऐसे हैं जो कि अकेले में मद्यसेवन करते है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि किशोरो में मद्यसेवन का प्रचलन निरन्तर बढ़ता जा रहा है जो कि एक गम्भीर सामाजिक समस्या है। देश की सरकार तो इससे चिन्तित है ही विश्व स्वास्थ्य संगठन भी इस चिन्ता से अछूता नहीं है। प्राचीन काल में मद्यपान क्षत्रिय और निम्न जातियों और जनजातियों में ही मान्य था परन्तु स्वतन्त्रता पश्चात् पाश्चात्य संस्कृति के अंधाधुन्ध अनुकरण के कारण युवा वर्ग एवं महिलाओं द्वारा नि:संकोच इसका सेवन किया जा रहा है जिसके कारण सामाजिक संबंधों में तो शिथिलता आई ही है इसके अतिरिक्त भी व्यक्ति और व्यक्ति के आपसी संबधों के बीच भी दूरियां बढ़ रही है। पहले मदिरा सम्पन्न लोगों का पसन्दीदा पेय माना जाता था वहीं वर्तमान में आधुनिकीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया के कारण मद्यपान के प्रति समाज का दृष्टिकोण परिवर्तित हो रहा है जो कि अत्यन्त चिन्ताजनक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Modi, Ishwar (1997), "Drugs; Addition and Prevention", Rawat Publication, New Delhi.
2. Starc, Rodni (1975), "Alcoholism and Drug Addiction in Social Problem", Rendam Home, Toranto
3. शर्मा, ब्रह्मदेव (1997), 'शराब ? फैसला समाज का', सहयोग पुस्तक कुटीर प्रकाशन, नई दिल्ली
4. Gururaj, Get al; (2011), "Alcohol Related Harms, Implications for Public Health ad Policy in India", Publication No. 73, Bangalore
5. Amon, I. and Rudlf, M. (1979), "Alcohol use Among College students: Some Competing hypothesis" J. Youth Adol.

****